Shyam-Vidya Ayurveda P.G. Entrance Coaching Center, Bhopal (M.P.)
Test series Paper – 1 – चरक संहिता सूत्रस्थान
By- Dr. Neelima Singh Lodhi (M.D.) Mob. 09826438399, 09993961427

(1) चरकसंहिता की 'चरकोपस्कार' टीका के टीकाकार का काल है।
(a) 11 वीं सदी
(b) 17 वीं सदी
(c) 19 वीं सदी
(d) 20 वीं सदी

(2) चरक संहिता पर रचित हिन्दी टीका ''चरक चन्द्रिका'' के लेखक कौन हैं।
(a) गयदास
(b) चक्रपाणि
(c) ब्रह्मानन्द त्रिपाठी
(d) रविदत्त त्रिपाठी

(3) चरकसंहिता की 'चरकभाष्य' टीका के टीकाकार कौन है।
(a) चक्रपाणि
(b) जेज्जट
(c) भट्टार हरिश्चन्द्र
(d) श्रीकृष्ण वैद्य

(4) चरकसंहिता पर भट्टार हरिश्चन्द्र द्वारा रचित 'चरकन्यास' टीका चरक सूत्रस्थान के कौनसे अध्याय तक मिलती है।
(a) प्रथम अध्याय
(b) द्वितीय अध्याय
(c) तृतीय अध्याय
(d) चतुर्थ अध्याय

(5) सूची –I को सूची–II के साथ सुमेलित कीजिए और सूचियों के नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए।

सूची – I	सूची – II
A. चक्रपाणि	1. 17 वी सदी
B. शिवदाससेन	2. 19 वी सदी
C. गंगाधर राय	3. 11 वी सदी
D. नरसिंह कविराज	4. 16 वी सदी

कूट :–	A	B	C	D
(a)	4	2	3	1
(b)	1	2	3	4
(c)	3	4	1	2
(d)	3	4	2	1

(6) चरक संहिता पर अब तक कुल कितनी टीकाऐं लिखी जा चुकी है।
(a) 43
(b) 17
(c) 41
(d) 44

(7) सूची –I को सूची –II के साथ सुमेलित कीजिए और सूचियों के नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए ?

सूची – I	सूची – II
A. क्षीरस्वामी दत्त	1. निरन्तर पद व्याख्या
B. ज्योतिष चन्द्र सरस्वती	2. वृहत्तन्त्र प्रदीप
C. जेज्जट	3. चरक प्रदीपिका
D. नरदत्त	4. चरक वार्त्तिक

कूट :–	A	B	C	D
(a)	1	2	3	4
(b)	4	3	1	2
(c)	1	4	1	3
(d)	4	3	2	1

(8) चरक किसके राजवैद्य थे।
(a) विक्रमादित्य
(b) चन्द्रगुप्त
(c) वैशम्पायन
(d) कनिष्क

(9) चरकसंहिता के चिकित्सा स्थान का निम्न में से कौनसा अध्याय दृढबल द्वारा पूरित है ?
(a) गुल्म चिकित्सा
(b) अतिसार चिकित्सा
(c) विसर्प चिकित्सा
(d) विष चिकित्सा

(10) चरक संहिता को ''अखिलशास्त्रविद्याकल्पद्रुम'' किसने कहा है।
(a) शिवदाससेन
(b) गंगाधर रॉय
(c) चक्रपाणि
(d) जेज्जट

(11) चरक संहिता में ''उत्तर तंत्र'' शामिल था – ऐसा किसने कहा है ?
(a) शिवदाससेन (b) पं शिव शर्मा
(c) चक्रपाणि (d) जेज्जट
(12) 'आचार्य रसायन' किस आचार्य की मौलिक देन है।
(a) सुश्रुत (b) चरक
(c) भावप्रकाश (d) वाग्भट्ट
(13) चरक संहिता में 'कृष्णात्रेय' का उल्लेख कौनसे अध्याय में है।
(a) दीर्घञ्जीवितीय (b) तिस्त्रैषणीय
(c) यज्जःपुरूषीय (d) आत्रेयभद्रकाप्यीय
(14) चरकसंहिता के सूत्रस्थान के औषध चतुष्क में कौन–कौन से अध्याय आते हैं।
(a) 1–4 (b) 4–8
(c) 9–12 (d) 16–20
(15) चरक संहिता के तृतीय चतुष्क का नाम क्या है।
(a) स्वास्थ्य चतुष्क (b) निर्देश चतुष्क
(c) कल्पना चतुष्क (d) योजना चतुष्क
(16) निम्नलिखिति में से कौन अग्निवेश का सहपाठी नहीं था।
(a) भेल (b) हारीत
(c) वैतरण (d) क्षारपाणि
(17) 'त्रिदण्ड' का अर्थ है।
(a) वात, पित्त, कफ (b) सत्व, रज, तम
(c) आहार, निद्रा, ब्रह्मचर्य (d) सत्व, आत्मा, शरीर
(18) ''सेन्द्रिय''का क्या अर्थ है ?
(a) इन्द्रिय युक्त (b) इन्द्रिय रहित
(c) चेतना युक्त (d) मन युक्त
(19) ''द्रव्य लक्षणन्तु क्रियागुणवत् समवायिकारणं इति'' – किस आचार्य का कथन है।
(a) चरक (b) सुश्रुत
(c) वैशेषिक दर्शन (d) वाग्भट्ट
(20) अष्टमूत्र के संदर्भ में 'लाघवं जातिसामान्ये स्त्रीणां, पुंसां च गौरवम्' – किस आचार्य का कथन है।
(a) चरक (b) सुश्रुत
(c) भावप्रकाश (d) वाग्भट्ट
(21) चरकानुसार 'क्षीरं' किसका ग्राह्य अंग है।
(a) जांगम (b) औद्भिद्
(c) दोनों (d) पार्थिव
(22) पित्तशामक रसों की वरीयता का क्रम है।
(a) मधुर, तिक्त, कषाय (b) मधुर, कषाय, तिक्त,
(c) कषाय, मधुर, तिक्त (d) तिक्त, मधुर, कषाय
(23) चरक संहिता में किसका उल्लेख नहीं है।
(a) पंचलोह (b) मनःशिला
(c) हरताल (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं
(24) 'मूत्रं मानुषं तु विषापहम्' – किस आचार्य का कथन है ?
(a) चरक (b) सुश्रुत
(c) अष्टांग संग्रह (d) भाव प्रकाश
(25) चरकानुसार निम्न में कौन सा एक मूलिनी द्रव्य नहीं हैं –
(a) गवाक्षी (b) बिम्बी
(c) आरग्वध (d) अजगन्धा

(26) चरक ने अपामार्गतण्डुलीय अध्याय में 'त्रिफला' को कौनसे वर्ग में शामिल किया है।
(a) शिरोविरेचन
(b) विरेचन
(c) आस्थापन, अनुवासन
(d) वमन

(27) तक्रसिद्धा यवागू: – है ?
(a) घृतव्यापद नाशक
(b) तैलव्यापद नाशक
(c) मद्यव्यापद नाशक
(d) क्षुधानाशक

(28) किसी औषधि की योजना (युक्ति) किस पर निर्भर करती हैं।
(a) औषधि की मात्रा व काल पर
(b) काल और वय पर
(c) रोगी के बल और काल पर
(d) कोष्ठ और अग्निबल पर

(29) तेजपत्र, सुगन्धबाला, लोध्र, अभय और चन्दन के लेप का प्रयोग किस संदर्भ में हैं ?
(a) विषघ्न
(b) शरीरदौर्गन्ध्यहर
(c) स्वेदहर
(d) कुष्ठहर

(30) चरक ने अर्जुन का प्रयोग किस महाकषाय में वर्णित किया है।
(a) हृद्य
(b) शूल प्रशमन
(c) मूत्र संग्रहणीय
(d) उदर्द प्रशमन

(31) चरक संहिता में महाकषाय का वर्णन किस स्वरूप में हैं।
(a) लक्षण व उदाहरण
(b) कर्म और उदाहरण
(c) कर्म और लक्षण
(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

(32) चरक ने निम्न किस महाकषाय का वर्णन नहीं किया है।
(a) दीपनीय
(b) पाचनीय
(c) कण्ठ्य
(d) संज्ञास्थापन

(33) तृष्णानिग्रहण एंव वयः स्थापन दोनों दशेमानि में समाविष्ट है।
(a) अभया
(b) अमृता
(c) नागर
(d) पुनर्नवा

(34) चरकोक्त कुष्ठघ्न व कृमिघ्न दोनों महाकषाय में समाविष्ट है।
(a) हरिद्रा
(b) खदिर
(c) आरग्वध
(d) विडंग

(35) चरक के पंचाशन्महाकषाय में निग्रहण महाकषायों की संख्या है।
(a) 3
(b) 4
(c) 5
(d) 7

(36) निम्न में से किस द्रव्य का समावेश चरकोक्त स्तन्यशोधन महाकषाय तथा सुश्रुतोक्त मुस्तादि व वचादिगण में है ?
(a) पाठा
(b) सरिवा
(c) मुस्ता
(d) गुडूची

(37) निम्नलिखित में से किस चरकोक्त दशेमानि में 'मोचरस' शामिल नहीं हैं।
(a) पुरीष संग्रहणीय
(b) वेदनास्थापन
(c) शोणित स्थापन
(d) पुरीषविरंजनीय

(38) 'भिषग्वर' का वर्णन चरक संहिता के किस अध्याय में है।
(a) दीर्घन्जीवितीय
(b) खुड्डाक चतुष्पाद
(c) षड्विरचेनशताश्रितीय
(d) महारोगाध्याय

(39) बेर के भेदों का वर्णन किस महाकषाय में है।
(a) वमनोपग
(b) विरेचनोपग
(c) स्नेहोपग
(d) स्वेदनोपग

(40) चरक संहिता में वर्णित "पुरीष संग्रहणीय" महाकषाय के द्रव्य है।
(a) आम संग्राहक (ग्राही)
(b) पक्व संग्राहक (स्तम्भन)
(c) दोनों
(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

(41) द्रव्यादापोत्थितात्तोये प्रतप्ते निशि संस्थितात् – किसका लक्षण है।
(a) कषाय (b) शीत
(c) फाण्ट (d) अभिसव
(42) चरकानुसार किसका प्रयोग लगातार नहीं करना चाहिए।
(a) दूध (b) दही
(c) घृत (d) मधु
(43) 'दन्तशोधन चूर्ण' का वर्णन किस आचार्य ने किया हैं।
(a) चरक (b) सुश्रुत
(c) शार्ग्धर (d) वाग्भट्ट
(44) चक्षुस्तेजोमयं तस्य विशेषाच्छ्लेष्मतो भयम् । ततः ..... कर्म हितं दृष्टेः प्रसादनम्।। (च. सू. 5/16)
(a) वातहरं (b) पित्तहरं
(c) श्लेष्महरं (d) त्रिदोषहरं
(45) काम्यं यशस्यनामुष्यं अलक्ष्मीघ्न प्रहर्षणं। श्रीमत्पारिषदं शस्तं – किसके लिए कहा गया है।
(a) क्षौरकर्म को (b) गन्ध माल्य धारण को
(c) स्वच्छ वस्त्र धारण (d) स्नान को
(46) चरक ने प्रायोगिक धूम्रपान के कितने दैनिक काल बताये है।
(a) 8 (b) 2
(c) 3–4 (d) 1
(47) नासा हि शिरसो द्वारं तेन तद्धयाप्य हन्ति तान्। – किस आचार्य का कथन हैं।
(a) चरक (b) सुश्रुत
(c) शार्ग्धर (d) वाग्भट्ट
(48) चरक ने नेत्र स्रावणार्थ कौनसा अंजन बतलाया है।
(a) सौवीराजंन (b) रसाजंन
(c) स्रोत्रोजंन (d) प्रत्यंजन
(49) 'यमंदष्ट्रा काल' हैं।
(a) कार्तिक माह के अंतिम के आठ दिन (b) अगहन माह के प्रारंभ के आठ दिन
(c) अ, ब दोनों (d) उपर्युक्त में से कोई नही
(50) सर्वदोष प्रकोपक ऋतु है।
(a) प्रावृट् ऋतु (b) बंसत ऋतु
(c) वर्षा ऋतु (d) ग्रीष्म ऋतु
(51) 'प्रघर्षोद्वर्तन स्नानगन्धमाल्यपरो भवेत्' का निर्देश किस ऋतु में मिलता है।
(a) हेमंत ऋतु (b) बंसत ऋतु
(c) वर्षा ऋतु (d) ग्रीष्म ऋतु
(52) आदान काल में कौनसे गुण की वृद्धि होती है।
(a) उष्ण (b) शीत
(c) रूक्ष (d) स्निग्ध
(53) विर्सग काल में कौनसे रस की अभिवृद्धि नहीं होती है।
(a) मधुर (b) अम्ल
(c) लवण (d) कटु
(54) शार्ंग्धर के अनुसार सिंह – कन्या राशि माह है।
(a) हेमन्त (b) बसंत
(c) बर्षा (d) ग्रीष्म
(55) चरकानुसार वर्षा ऋतु में कौनसे महाभूत प्रबल होते है।
(a) पृथ्वी + जल (b) पृथ्वी + वायु
(c) अग्नि + जल (d) पृथ्वी + अग्नि

(56) 'घनात्यये' कौनसी ऋतु का पर्याय है।
(a) हेमन्त (b) शरद
(c) बर्षा (d) ग्रीष्म
(57) चरकानुसार 'दिवास्वस्न' किस ऋतु में वर्ज्य है।
(a) बसन्त (b) शरद
(c) बर्षा (d) उपर्युक्त सभी
(58) शिशिर ऋतु में कौनसे रस वर्ज्य हैं।
(a) कटु, तिक्त, कषाय रस (b) मधुर, तिक्त, कषाय रस
(c) मधुर, अम्ल, लवण रस (d) कटु, अम्ल, लवण रस
(59) चरकानुसार शिशिर ऋतु में किस ऋतुतुल्य चर्या करनी चाहिए है –
(a) हेमन्त (b) शरद
(c) ग्रीष्म (d) बसंत
(60) 'आदानदुर्बले देहे ..... भवति दुर्बलः।
(a) पक्ता (b) रोग
(c) पुरूषः (d) पित्तः
(61) वर्षा ऋतु में मधु का प्रयोग किस तरह करना चाहिए।
(a) पान में (b) भोजन में
(c) संस्कार में (d) उपरोक्त सभी
(62) 'विनाम' किसके वेगनिग्रह का लक्षण है।
(a) मूत्र (b) शुक्र
(c) पुरीष (d) अधोवात
(63) 'निर्लज्जता' किसका धारणीय वेग है।
(a) मन का (b) वाणी का
(c) शरीर का (d) उपर्युक्त में काई नहीं
(64) चरकानुसार किस वेगरोधजन्य व्याधि में भोजन के बाद घृतपान करते है –
(a) क्षवथु (b) उद्गार
(c) पिपासा (d) क्षुधा
(65) 'विण्मूत्रवातसंग' किसके वेगनिग्रह का लक्षण है।
(a) मूत्र (b) शुक्र
(c) पुरीष (d) अधोवात
(66) स्वेदन, अभ्यंग, अवगाहन का क्रमशः निर्देश किसकी चिकित्सा में है।
(a) मूत्रवेग धारण (b) शुक्रवेग धारण
(c) पुरीषवेग धारण (d) निद्रावेग धारण
(67) 'पिण्डिकोद्वेष्टन' किसके वेगनिग्रह का लक्षण है।
(a) मूत्र (b) शुक्र
(c) पुरीष (d) अधोवात
(68) चरकानुसार अतिव्यायाम से हो सकता है –
(a) प्रतमक श्वास (b) वमन
(c) रक्तपित्त (d) उपर्युक्त सभी
(69) वातिकाद्याः सदाऽऽतुराः – किसका कथन है।
(a) चरक (b) सुश्रुत
(c) काश्यप (d) चक्रपाणि
(70) चरकानुसार कफ का निर्हरण किस मास में करना चाहिए।
(a) चैत्र (b) श्रावण
(c) अगहन (d) पौष

(71) ''चेष्टाप्रत्ययभूतं इन्द्रियाणाम्'' – किसका कार्य है।

(a) वात (b) आत्मा

(c) मस्तिष्क (d) उपर्युक्त में से काई नहीं

(72) 'चक्षु' है।

(a) इन्द्रिय (b) इन्द्रियार्थ

(c) इन्द्रियाधिष्ठान (d) इन्द्रिय द्रव्य

(73) इन्द्रियों को अंहकारिक किसने माना है।

(a) वैशेषिक (b) न्याय

(c) सांख्य (d) चरक

(74) चरकानुसार किस दिशा में मुख करके भोजन करना चाहिए।

(a) पूर्व (b) उत्तर

(c) पश्चिम (d) दक्षिण

(75) चरकानुसार चिकित्सा के चतुष्पाद में वैद्य के प्रधान होने का कारण है।

(a) हेतुज्ञ, युक्तिज (b) मेधावी, युक्तिज

(c) ज्ञाता, शासिता (d) विज्ञाता, शासिता

(76) 'दाक्ष्य किसका गुण है।

(a) वैद्य (b) परीक्षक

(c) परिचारक (d) उर्पयुक्त सभी

(77) 'निर्देशकारित्वम्' किसका गुण है।

(a) वैद्य (b) औषध

(c) परिचारक (d) आतुर

(78) हेतो लिंगे प्रशमने रोगाणाम् अपुनर्भवे – चरकानुसार किस वैद्य के ज्ञान है ?

(a) राजार्ह वैद्य (b) प्राणाभिसर वैद्य

(c) उत्तम वैद्य (d) रोगाभिसर वैद्य

(79) चरकानुसार वैद्यवृत्ति कितनी है ?

(a) 02 (b) 03

(c) 04 (d) 05

(80) 'आत्मेन्द्रियमनोर्थानां सन्निकर्षात् प्रवर्तते। यक्ता तदात्वे या बुद्धिः ..... सा निरूच्यते।

(a) प्रत्यक्ष (b) अनुमान

(c) आप्तोपदेश (d) युक्ति

(81) चरकानुसार कौनसा प्रमाण त्रिकालिक नहीं होता है।

(a) प्रत्यक्ष (b) अनुमान

(c) आप्तोपदेश (d) युक्ति

(82) न च तुल्य गुणों दूष्यो न दोषः प्रकृति भवेत् – किसका लक्षण है।

(a) सुखसाध्य (b) कृच्छ्रसाध्य

(c) याप्य (d) प्रत्याख्येय

(83) नातिपूर्ण चतुष्पदम् – कौन से रोग का लक्षण है।

(a) सुखसाध्य (b) कृच्छ्रसाध्य

(c) याप्य (d) प्रत्याख्येय

(84) चरकानुसार निम्न में कौन सा प्रमाण पुनर्जन्म सिद्ध करता हैं –

(a) प्रत्यक्ष (b) आप्तोपदेश

(c) अनुमान (d) उपरोक्त सभी

(85) 'आहार, स्वप्न तथा अब्रह्मचर्य' – किस आचार्य के अनुसार त्रय उपस्तम्भ हैं।

(a) चरकानुसार (b) अष्टांग संग्रहानुसार

(c) अष्टांग हृदयानुसार (d) ब, स दोनों

(86) कोष्ठ में होने वाली व्याधियॉ की संख्या कही गयी है।

(a) 14 (b) 16

(c) 11 (d) उपर्युक्त कोई नहीं

(87) विसर्पश्वयथुगुल्मोर्शोविद्रध्यादयः – कौनसी व्याधियॉ है। (च. सू. 11/49–50)

(a) शाखानुसारि रोग (b) कोष्ठानुसारि रोग

(c) मध्यममार्गानुसारि रोग (d) अ, ब दोनों

(88) ''षड्धातु पंचमहाभूत तथा आत्मा के संयोग से गर्भ की उत्पत्ति होती है'' – ये किस प्रमाण का उदाहरण हैं।

(a) प्रत्यक्ष प्रमाण (b) आप्तोपदेश प्रमाण

(c) अनुमान प्रमाण (d) युक्ति प्रमाण

(89) प्रत्यक्ष प्रमाण में बाधक कारण है ?

(a) 4 (b) 8

(c) 7 (d) 6

(90) चरकानुसार ज्ञान–अज्ञान में कौनसा दोष उत्तरदायी होता है।

(a) वात (b) पित्त

(c) कफ (d) आम

(91) चरक संहिता के तिस्त्रैषणीय अध्याय में अष्ट त्रित्व का वर्णन किस आचार्य ने किया है।

(a) पुनर्वसु आत्रेय (b) मैत्रेय

(c) भिक्षु आत्रेय (d) कृष्णात्रेय

(92) ''मन का नियत्रंण करना'' – किसका कार्य है।

(a) वायु (b) आत्मा

(c) मस्तिष्क (d) स्वंय मन

(93) 'सर्वशरीरधातुव्यूहकर' है ?

(a) घृत (b) अश्वगंधा

(c) वायु (d) पित्त

(94) चरक ने निम्न किसमें स्नेह की उत्तम मात्रा का निर्देश किया है –

(a) वातरक्त (b) प्रमेह

(c) कुष्ठ (d) मूत्रकृच्छ

(95) 'अच्छपेय स्नेह' निम्नलिखित में कौन सी कल्पना है।

(a) प्रथम कल्पना (b) प्रथम कल्पना और प्रविचारणा

(c) प्रविचारणा (d) अल्प स्नेहन

(96) उदीर्णपित्तऽल्पकफा ग्रहणी मन्दमारूता। – किसका लक्षण है।

(a) मृदु कोष्ठ (b) मध्य कोष्ठ

(c) क्रूर कोष्ठ (d) ग्रहणी

(97) 'प्रस्कन्दन' किसका पर्याय है।

(a) वमन (b) विरेचन

(c) स्तम्भन (d) लेखन

(98) 'मृदुकोष्ठ' हेतु स्नेह की कौनसी मात्रा का निर्देशित है।

(a) ह्रस्व (b) मध्यम

(c) उत्तम (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

(99) चरकानुसार किसमें स्वेदन का निषेध है।

(a) नित्य कषाय द्रव्य का सेवन करने वाले (b) नित्य मधुर द्रव्य का सेवन करने वाले

(c) नित्य कटु द्रव्य का सेवन करने वाले (d) उर्पयुक्त में कोई नहीं।

(100) चरक ने 'पिण्डस्वेद' का अंतर्भाव किसमें किया गया है।

(a) संकरस्वेद (b) प्रस्तर स्वेद

(c) नाडी स्वेद (d) जेन्ताक स्वेद

(101) उपनाह स्वेद के 2 भेद किसने बतलाए है ?
(a) चरक
(b) चक्रपाणि
(c) अष्टांग हृदय
(d) अष्टांग संग्रह

(102) चरकानुसार निराग्नि स्वेद है।
(a) अवगााहन
(b) परिषेक
(c) बहुपान
(d) अध्व

(103) 'जेन्ताक' का सम्बन्ध किससे है।
(a) स्नेहन
(b) स्वेदन
(c) नस्य
(d) स्तम्भन

(104) जेन्ताक स्वेदन के लिये कुटी का विस्तार कितना होना चाहिए।
(a) 4 अरत्नि
(b) 8 अरत्नि
(c) 12 अरत्नि
(d) 16 अरत्नि

(105) स्वेदन के अतियोग में विसर्प सम चिकित्सा किस आचार्य ने बतलायी हैं।
(a) चरक
(b) काश्यप
(c) शार्ग्धर
(d) वाग्भट्ट

(106) ''स्वभावात् विनाशकारणनिरपेक्षात् उपरमो विनाशः स्वभावोपरमः'' – किसका कथन है।
(a) चक्रपाणि
(b) चरक
(c) आत्रेय
(d) वाग्भट्ट

(107) स्वभावोपरमवाद किसका सिद्धान्त है।
(a) न्याय दर्शन का
(b) वैशेषिक दर्शन का
(c) बौद्ध दर्शन का
(d) जैन दर्शन का

(108) 'तन्द्रा' कौनसे शिरोरोग का लक्षण है।
(a) वातज
(b) कफज
(c) त्रिदोषज
(d) ब, स दोनों

(109) ''दर'' (हदय में मरमर ध्वनि की प्रतीति होना) – कौनसे हृदय रोग का लक्षण हैं।
(a) वातज
(b) पित्तज
(c) कफज
(d) त्रिदोषज

(110) विभेति दुर्बलोऽभीक्ष्णं व्यायति व्यधितेन्द्रियः। दुश्छायो दुर्मना रूक्षः क्षामश्चैव – चरकानुसार किसका लक्षण है।
(a) ओजनाश
(b) ओजविस्रंस
(c) ओजक्षय
(d) ओजच्युति

(111) चरकानुसार रस क्षय का लक्षण है।
(a) शून्यता
(b) त्वक्पारूष्य
(c) शूल
(d) तोद

(112) आचार्य चरकानुसार 'आस्यासुख' किस रोग का निदान नहीं हैं।
(a) प्रमेह
(b) मधुमेह
(c) कफज शिरोरोग
(d) वातरक्त

(113) प्रथम जायते ह्योजः शरीरेऽस्मिन् शरीरिणाम्। – किसने कहा है ?
(a) चरक
(b) चक्रपाणि
(c) सुश्रुत
(d) वाग्भट्ट

(114) ''कुलत्थिका'' नामक प्रमेह पिडिका का वर्णन किस आचार्य ने किया हैं।
(a) भावप्रकाश
(b) भेल
(c) भोज
(d) भारद्वाज

(115) पिडका नातिमहती क्षिप्रपाका महारूजा। – प्रमेह पिडिका है।
(a) जालिनी
(b) अजली
(c) सर्षपी
(d) विनता

(116) "अरूंषिका" नामक प्रमेह पिडिका का वर्णन किस आचार्य ने किया हैं।
(a) भावप्रकाश (b) भेल
(c) काश्यप (d) भरद्वाज
(117) पृष्ठ और उदर में होने वाली प्रमेह पिडिका है।
(a) जालिनी (b) अजली
(c) विनता (d) सर्षपी
(118) जृम्भा कौनसी दोषज विद्रधि का लक्षण है।
(a) वातज (b) पित्तज
(c) कफज (d) त्रिदोषज
(119) 'वातनिरोध' कौनसी अभ्यांतर विद्रधि का लक्षण है।
(a) गुदा (b) वस्ति
(c) कुक्षि (d) वंक्षण
(120) 'हिक्का' कौनसी अभ्यांतर विद्रधि का लक्षण है।
(a) नाभि (b) वस्ति
(c) हृदय (d) यकृत
(121) चरक ने विद्रधि की चिकित्सा किसके समान बतायी है।
(a) व्रण (b) शोफ
(c) गुल्म (d) अ, स दोनों
(122) कौनसा शोथ दिवाबली होता हैं।
(a) वातज (b) पित्तज
(c) कफज (d) त्रिदोषज
(123) चरक संहिता मे त्रिशोथीयाध्याय कौनसे चतुष्क से सम्बधित है।
(a) रोग चतुष्क (b) योजना चतुष्क
(c) निर्देश चतुष्क (d) क्रिया चतुष्क
(124) चरकानुसार निम्नलिखित में कौन सा शोथ का उपद्रव नहीं है।
(a) छर्दि (b) ज्वर
(c) श्वास (d) दाह
(125) उदररोग शोथ में दोष अधिष्ठान का स्थान होता है।
(a) आमाशय (b) पक्वाशय
(c) त्वङ्मांसान्तर आश्रित (d) महास्रोत्रस
(126) शोथ के पृथु, उन्नत और ग्रंथित भेद किसने माने है।
(a) चरक (b) सुश्रुत
(c) माधव (d) वाग्भट्ट
(127) 'हृदयाद' कौनसा कृमि है ?
(a) बाह्य कृमि (b) रक्तज कृमि
(c) श्लेष्मज कृमि (d) पुरीषज कृमि
(128) चरकानुसार 'क्लैब्य' के भेद होते है।
(a) 4 (b) 5
(c) 6 (d) 7
(129) 'एकोमहागदम्' किस व्याधि हेतु कहा गया है।
(a) अतत्वाभिनिवेश (b) हलीमक
(c) संयास (d) रक्तपित्त
(130) प्रकृति भेद से रोग के कितने प्रकार होते है।
(a) 2 (b) 3
(c) 4 (d) 5

(131) सूची–I को सूची –II के साथ सुमेलित कीजिए और सूचियों के नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए।

सूची –I	सूची –II
A. उदावर्त	1. 2 भेद
B. ग्रधसी	2. 5 भेद
C. मूत्राघात	3. 6 भेद
D. प्लीह दोष	4. 8 भेद

कूट :–

	A	B	C	D
(a)	1	3	2	4
(b)	3	1	2	4
(c)	3	1	4	2
(d)	4	3	1	2

(132) चरकानुसार आम और त्रिदोष समुत्थित रोग होता है।

(a) उरूस्तंभ (b) अतत्वाभिनिवेश
(c) हलीमक (d) सन्यास

(133) आशयापकर्ष दोषों की कितनी गतियॉ होती है।

(a) 5 (b) 9
(c) 10 (d) 11

(134) सूची–I को सूची–II के साथ सुमेलित कीजिए एवं सूचियों के नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए।

सूची –I	सूची –II
A. ओष	1. सम्पूर्ण शरीर में स्वेद एंव बेचैनी के साथ तीव्र दाह
B. प्लोष	2. शरीर के किसी अंग में स्वेदरहित, अग्नि सम अल्प दाह
C. दवथु	3. इन्द्रियों में जलन
D. धूमक	4. मुख से धूम निकलते हुए की तरह प्रतीत होना

कूट :–

	A	B	C	D
(a)	1	2	3	4
(b)	4	3	2	1
(c)	2	1	3	4
(d)	1	3	2	4

(135) हिक्का, त्वगवदरण, शीताग्निता क्रमशः किसके नानात्मज विकार है।

(a) वात, पित्त, कफ (b) कफ, रक्त, पित्त
(c) कफ, वात, पित्त (d) वात, पित्त, रक्त

(136) चरक ने निम्न किसकी चिकित्सा में वृहत पंचमूल का प्रयोग शहद के साथ निर्देशित किया है।

(a) प्रतिश्याय (b) अतिस्थौल्य
(c) अतिकार्श्य (d) पित्ताश्मरी

(137) चरक ने अतिनिद्रा की चिकित्सा में निम्न में किसका निर्देश किया है।

(a) रक्तमोक्षण (b) शिरोविरेचन
(c) कायविरेचन (d) उपर्युक्त सभी

(138) स्वाभावात् निद्रा – का वर्णन किस आचार्य ने किया है।

(a) चरक (b) काश्यप
(c) सुश्रुत (d) वाग्भट्ट

(139) 'स्फिक्, ग्रीवा व उदर शुष्कता' चरकानुसार किसका लक्षण है।

(a) मांस धातु क्षय (b) मेद धातु क्षय
(c) अतिकार्श्य (d) अ, स दोनों

(140) अष्टौनिन्दितीय अध्याय में वर्णित रोग है।

(a) दुष्ट रसज (b) दुष्ट रक्तज
(c) दुष्ट मेदज (d) दुष्ट मांसज

(141) भूधात्री निद्रा हैं –

(a) तमोभवा (b) रात्रिस्वभावप्रभवा
(c) आगन्तुकी (d) वैकारिकी

(142) चरकानुसार ग्रीष्म ऋतु को छोड़कर अन्य ऋतु में दिवास्वप्न से किसका प्रकोप होता है।
(a) कफ
(b) कफपित्त
(c) त्रिदोष
(d) वातपित्त

(143) अतिस्थूलता की चिकित्सा सिद्वांन्त है।
(a) गुरू आहार व संतर्पण
(b) लघु आहार व संतर्पण
(c) गुरू आहार व अपतर्पण
(d) लघु आहार व अवतर्पण

(144) कार्श्यमेव वरं स्थौल्याद् न हि स्थूलस्य भेषजम्। – किस आचार्य का कथन हैं।
(a) चरक
(b) सुश्रुत
(c) शार्ग्धर
(d) वाग्भट्ट

(145) चरकानुसार कार्श्य जन्य के दोषों में –
'प्लीहा कास क्षयः श्वासो गुल्मोऽर्शास्युदराणि च कृशं प्रायो धावन्ती रोगाश्च ..... गता। (च. सू. 21/14)
(a) ग्रहणी
(b) पाण्डु
(c) रक्त
(d) प्रत्याख्येय

(146) हनुसंग्रहः हृद्वर्चोनिग्रहश्च – किसके अतियोग का लक्षण हैं।
(a) स्वेदन
(b) रूक्षण
(c) स्तम्भन
(d) लघन

(147) चरकोक्त लंघन के 10 प्रकारों में द्रव्यरूप लंघन है –
(a) 10
(b) 5
(c) 7
(d) 6

(148) चरक ने निम्न किस व्याधि में पाचन द्वारा लंघन का निर्देश किया है।
(a) हृदयरोग
(b) अतिसार
(c) विबंध
(d) उपर्युक्त सभी

(149) चरकानुसार शर्करा, पिप्पलीचूर्ण, तैल, घृत, क्षौद्र और दुगुना सत्तु जल में घोलकर बनाया गया मन्थ होता है।
(a) वृष्य
(b) बल्य
(c) कार्श्यहर
(d) स्थौल्यहर

(150) चरकानुसार चिरक्षीण की क्या चिकित्सा है।
(a) सद्य संतर्पण
(b) संतर्पण अभ्यास
(c) दीपन
(d) अ, ब दोनों

(151) चरकानुसार ''सक्षौद्रश्चाभयाप्राशः'' किसकी चिकित्सा है।
(a) संतर्पण जन्य रोगों की
(b) अपंतर्पण जन्य रोगों की
(c) अतिस्थौल्य की
(d) अतिकार्श्य की

(152) चरकानुसार 'स्थिरपिच्छिलम्' कौनसे द्रव्यों के गुण है।
(a) स्वेदन
(b) स्नेहन
(c) रूक्षण
(d) स्तम्भन

(153) तन्नाशान्ना विनश्यति। – किसके लिए कहा गया है।
(a) रूधिर
(b) ओज
(c) आहार
(d) वायु

(154) ''रक्तपित्तहरी क्रियाम्'' – किसकी चिकित्सा में निर्दिष्ट है –
(a) पित्त
(b) रक्त
(c) दोनों की
(d) रक्तपित्त

(155) रक्तमोक्षण के पश्चात् किसकी रक्षा करनी चाहिए।
(a) अग्नि
(b) वात
(c) रक्त
(d) ओज

(156) गुंजाफल सर्वणम् च पदमालक्त सन्निभम्। इन्द्रगोपक संकाशम् – किसका लक्षण है।
(a) शुद्ध रक्त
(b) शुद्ध आर्तव
(c) दोनों
(d) उर्पयुक्त में से कोई नहीं

(157) जायते शाम्यति त्वाशु मदो मद्यमदाकृति। – कौनसे मद का लक्षण है।

(a) वातज (b) पित्तज

(c) कफज (d) सन्निपातज

(158) संज्ञावाही स्रोत्रस की व्याधि है।

(a) मद (b) अतत्वाभिनिवेश

(c) मूर्च्छा (d) सन्यास

(159) 'सद्यः फलाक्रिया निर्दिष्टः' किसमें बताया गया है।

(a) मद (b) मूर्च्छा

(c) संयास (d) उपर्युक्त सभी में

(160) मातृ–पितृवाद किससे सम्बन्धित है।

(a) शरलोमा (b) कौशिक

(c) भारद्वाज (d) भ्रदकाप्य

(161) मौदगल्य पारीक्ष किस मत के समर्थक थे।

(a) सत्ववाद (b) आत्मवाद

(c) रसवाद (d) षड्धातुवाद

(162) शूक धान्यों में अपथ्यतम है।

(a) कोद्रव (b) यवक

(c) यव (d) प्रियंगु

(163) ''वृष्य वातहराणाम्'' है।

(a) एरण्ड पत्र (b) एरण्ड मूल

(c) एरण्ड पंचांग (d) उपर्युक्त सभी

(164) अन्नद्रव्य अरूचिकर भावों में श्रेष्ठ है।

(a) पराघातनम् (b) तिन्दुक

(c) प्रमिताशन (d) रजस्वलाभिगमन

(165) सूची–I को सूची –II के साथ सुमेलित कीजिए और सूचियों के नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए।

सूची – I	सूची – II
A. सुखविरेचक	1. प्रत्यक्पुष्पा
B. मृदुविरेचक	2. चतुरगुंल
C. तीक्ष्णविरेचक	3. स्नुक्पय
D. शिरोविरेचक	4. त्रिवृत्त

कूट :–

	A	B	C	D
(a)	4	2	3	1
(c)	3	2	1	4

	A	B	C	D
(b)	1	2	3	4
(d)	4	3	1	2

(166) कुष्ठ .....।

(a) रोगाणाम् (b) दीर्घरोगाणाम्

(c) रोगसमूहानाम् (d) अनुषंगिणाम्

(167) चरक ने अग्रय प्रकरण में आमलकी को ..... बताया है।

(a) वातहर (b) दाहप्रशमन

(c) वयःस्थापन (d) रसायन

(168) 'निम्नलिखित में से कौन सी एक औषधि संग्रहणीय, दीपनीय और पाचनीय के रूप में नित्य सर्वाधिक उपयोगी है।

(a) मुस्ता (b) कट्वंग

(c) शतुपुष्पा (d) विल्ब

(169) हिक्का, कास, श्वास और पार्श्वशूलहर श्रेष्ठ औषधि कौन–सी है ?

(a) अनंतमूल (b) पुष्करमूल

(c) दशमूल (d) शटी

(170) चरक ने श्रेष्ठ बल्य बताया हैं।

(a) क्षीर (b) बला

(c) घृत (d) कुक्कुट

(171) सूची–I को सूची–II के साथ सुमेलित कीजिए और सूचियों के नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए

सूची –I	सूची –II
A. कुलत्थ	1. कास, श्वास, हिक्का व अर्श में हितकारी
B. सुरस	2. कास, श्वास, हिक्का व पार्श्वशूल नाशकों में श्रेष्ठ
C. पुष्करमूल	3. कास, श्वास, हिक्का, विषविकार व पार्श्वशूल नाशक
D. मदिरा	4. हिक्का, श्वास, प्रतिश्याय, कास, वर्चोग्रह में हितकारी

कूट :–

	A	B	C	D		A	B	C	D
(a)	3	1	2	4	(b)	1	3	2	4
(c)	3	2	1	4	(d)	1	3	4	2

(172) ''पथ्यं पथोऽनपेतं यद्यच्चोक्तं मनसः प्रियम्'' – किसने कहा है।

(a) चरक (b) चक्रपाणि

(c) सुश्रुत (d) वाग्भट्ट

(173) एरण्ड की लकड़ी की सींक पर भुना हुआ मोर का मांस खाना हैं।

(a) परिहार विरूद्ध (b) संयोग विरूद्ध

(c) संस्कार विरूद्ध (d) उपचार विरूद्ध

(174) आसुतत्वात् सन्धानरूपत्वात्। – आसव की यह परिभाषा किसने दी है ?

(a) चरक (b) चक्रपाणि

(c) आत्रेय (d) शारंर्धर

(175) रूक्ष गुण में रसों की प्रथम वरीयता का क्रम है।

(a) तिक्त, कषाय, कटु (b) कटु, कषाय, तिक्त,

(c) कषाय, कटु, तिक्त (d) तिक्त, मधुर, कषाय

(176) नानौषधीभूतं जगति किञ्चिद् द्रव्यमस्तीति – किसका कथन है।

(a) चरक (b) सुश्रुत

(c) काश्यप (d) चक्रपाणि

(177) चरकानुसार 'सिद्धयुपायाश्चिकित्साया' गुण है।

(a) गुर्वादि (b) आत्म गुण

(c) इन्द्रिय गुण (d) परादि गुण

(178) विपाकः कर्मनिष्ठया – किसका कथन है।

(a) चरक (b) सुश्रुत

(c) काश्यप (d) चक्रपाणि

(179) चरक ने फल वर्ग का आरम्भ किया फल वर्ग में हिततम है।

(a) खर्जूर (b) मृद्वीका

(c) फल्गु (d) आम्रतक

(180) अंतरिक्ष जल के 'पर्वत' पर गिरने पर किस रस की उत्पत्ति होगी।

(a) तिक्त (b) क्षार

(c) कटु (d) लवण

(181) 'टंक' किसका पर्याय है।

(a) सेव (b) नाशपाती

(c) अनार (d) केला

(182) 'नात्यर्थं गुरूः स्निग्ध उष्णश्च' कौनसा रस है।

(a) कटु (b) मधुर

(c) लवण (d) कषाय

(183) चरकानुसार लवलीफल का रस होता है।
(a) कटु (b) मधुर
(c) तिक्त (d) कषाय
(184) उर्ध्व चाधश्च वातानामानुलोम्यकरं लवण है।
(a) सैंधव (b) सौवर्चल
(c) पाक्य (d) विड
(185) रसासृङमांसमेदोजान्दोषान् हन्ति .....।
(a) गुड (b) आमलकीम्
(c) हरीतकीम् (d) विभीतकम्
(186) चरकानुसार किसका दुग्ध 'शाखा वातहरं' होता है।
(a) घोड़ी दुग्ध (b) उष्ट्रदुग्ध
(c) हस्ति दुग्ध (d) अजा दुग्ध।
(187) चरक ने शुक्ति और शंखक का वर्णन किस वर्ग में किया है।
(a) सुधा वर्ग (b) सिकता वर्ग
(c) कृतान्न वर्ग (d) मांसवर्ग
(188) सर्वान् रसान्लवणवर्जितान् – किसके लिए कहा गया है।
(a) लशुन (b) आमलकी
(c) हरीतकी (d) उपरोक्त सभी
(189) शोफं जनयति ?
(a) पयः (b) घृत
(c) दधि (d) तक्र
(190) कौनसा मधु गुरू होता है ?
(a) माक्षिक (b) क्षौद्र
(c) भ्रामर (d) पौत्तिक
(191) चरकानुसार कौनसी पिप्पली 'बृष्य' होती है।
(a) आर्द्र (b) शुष्क
(c) दोनों (d) उपरोक्त कोई नहीं
(192) 'वातहर' शिम्बी धान्य है ?
(a) मूँग (b) माष
(c) राजमाष (d) अरहर
(193) चरकानुसार 'प्रततं वातरोगीणि' किसके क्षय का लक्षण है।
(a) रस (b) मज्जा
(c) अस्थि (d) शुक्र
(194) ..... संयोगसंस्करात् सर्वरोगापहं मतम्। – (च. सू. 27/287)
(a) तैलं (b) सर्पि
(c) क्षीरं (d) गुड
(195) 'ग्रन्थि' कौनसा धातु प्रदोषज विकार है।
(a) मांस प्रदोषज (b) मेद प्रदोषज
(c) अस्थि प्रदोषज (d) उपधातु प्रदोषज
(196) 'पंचकर्माणि भेषजम्' कौनसे धातु प्रदोषज विकारों की चिकित्सा है।
(a) मांस प्रदोषज (b) मज्जा प्रदोषज
(c) अस्थि प्रदोषज (d) रक्त प्रदोषज
(197) श्रुत बुद्धिः स्मृतिः दाक्ष्यं धृतिः हितनिषेवणम्। – किसके गुण है ?
(a) आचार्य के (b) शिष्य के
(c) परीक्षक के (d) प्राणाभिसर के

(198) ध्मानात् धमन्यः सरणात् सिराः स्रवणात स्रोतांसि। सर्वप्रथम किसने कहॉ है।

(a) चरक (b) चक्रपाणि

(c) सुश्रुत (d) शार्ग्धर

(199) अगद तंत्र को 'विषगरवैरोधिक प्रशमंन' किसने कहा है।

(a) चरक (b) चक्रपाणि

(c) सुश्रुत (d) शार्ग्धर

(200) शाखा, विद्या, सूत्र, ज्ञान, शास्त्र और लक्षण किसके पर्याय है।

(a) तंत्र (b) तन्त्रार्थ

(c) आयुर्वेद (d) अ, स दोनों के

Space for Raf Work

Answer sheet – Test series Paper – 1 – चरक संहिता सूत्रस्थान				
1. C	21. B	41. B	61. D	81. A
2. C	22. D	42. B	62. A	82. A
3. D	23. C	43. B	63. A	83. B
4. D	24. C	44. C	64. A	84. D
5. D	25. C	45. C	65. D	85. D
6. A	26. B	46. B	66. C	86. B
7. B	27. A	47. D	67. C	87. D
8. D	28. A	48. B	68. D	88. D
9. D	29. B	49. C	69. C	89. B
10. B	30. D	50. C	70. A	90. C
11. A	31. A	51. C	71. D	91. D
12. B	32. B	52. C	72. A	92. A
13. B	33. B	53. D	73. C	93. C
14. A	34. D	54. C	74. B	94. D
15. B	35. A	55. D	75. D	95. A
16. C	36. C	56. B	76. D	96. A
17. D	37. D	57. D	77. D	97. B
18. C	38. C	58. A	78. A	98. B
19. B	39. B	59. A	79. C	99. A
20. C	40. B	60. A	80. A	100. A

101. **B**	121. **C**	141. **B**	161. **B**	181. **B**
102. **C**	122. **A**	142. **B**	162. **B**	182. **C**
103. **B**	123. **A**	143. **C**	163. **B**	183. **D**
104. **D**	124. **D**	144. **D**	164. **B**	184. **D**
105. **B**	125. **C**	145. **A**	165. **A**	185. **D**
106. **A**	126. **D**	146. **C**	166. **B**	186. **A**
107. **C**	127. **C**	147. **B**	167. **C**	187. **D**
108. **D**	128. **A**	148. **D**	168. **A**	188. **B**
109. **A**	129. **A**	149. **A**	169. **B**	189. **C**
110. **C**	130. **A**	150. **B**	170. **D**	190. **C**
111. **C**	131. **C**	151. **A**	171. **B**	191. **B**
112. **D**	132. **A**	152. **C**	172. **A**	192. **B**
113. **A**	133. **C**	153. **B**	173. **C**	193. **B**
114. **C**	134. **A**	154. **B**	174. **B**	194. **A**
115. **C**	135. **A**	155. **A**	175. **C**	195. **D**
116. **C**	136. **B**	156. **B**	176. **B**	196. **C**
117. **C**	137. **D**	157. **D**	177. **D**	197. **C**
118. **C**	138. **C**	158. **D**	178. **A**	198. **A**
119. **A**	139. **D**	159. **C**	179. **B**	199. **A**
120. **A**	140. **C**	160. **B**	180. **C**	200. **D**